

The Thinker and Thought	विचार और विचारकर्ता
Is there any relationship between the thinker and his thought, or is there only thought and not a thinker? If there are no thoughts there is no thinker. When you have thoughts, is there a thinker? Perceiving the impermanency of thoughts, thought itself creates the thinker who gives himself permanency; so thought creates the thinker; then the thinker establishes himself as a permanent entity apart from thoughts which are always in a state of flux. So, thought creates the thinker and not the other way about. The thinker does not create thought, for if there are no thoughts, there is no thinker. The thinker separates himself from his parent and tries to establish a relationship—a relationship between the so-called permanent, which is the thinker created by thought, and the impermanent or transient, which is thought. So, both are really transient.	क्या विचारकर्ता और विचार के बीच कोई संबंध होता है या केवल विचार होता है न कि विचारकर्ता? यदि कोई विचार नहीं है तो विचारकर्ता भी नहीं होगा। जब आपको विचार आते हैं तो क्या तब कोई विचारकर्ता भी होता है? विचारों के अस्थायित्व को समझते हुए विचार स्वयं विचारकर्ता का निर्माण करता है जो स्वयं को स्थायित्व प्रदान करता है। इस प्रकार विचार ही विचारकर्ता को निर्मित करता है और तब विचारकर्ता स्वयं को विचारों से पृथक एक अस्तित्व के रूप में प्रतिष्ठित कर लेता है और वे विचार तो सदैव गति की, परिवर्तन की अवस्था में रहते हैं। इस प्रकार विचार ही विचारक का निर्माणकर्ता है न कि विचारकर्ता विचार का। विचारक विचार का निर्माता नहीं है क्योंकि यदि विचार नहीं है तो, विचारक भी नहीं है। विचारक स्वयं को अपने निर्माता से पृथक कर लेता है और एक संबंध स्थापित करने का प्रयास करता है—एक तथाकथित स्थायी अर्थात् विचारनिर्मित विचारक और अस्थायी व अस्थिर विचार के बीच संबंध। अतः वास्तव में दोनों ही अस्थिर हैं।
Pursue a thought completely to its very end. Think it out fully, feel it out and discover for yourself what happens. You will find that there is no thinner at all. For, when thought ceases, the thinker is not. We think there are two states, as the thinker and the thought. These two states are fictitious, unreal. There is only thought, and the bundle of thought creates the 'me', the thinker.	किसी विचार का उसके अंतिम छोर तक अनुसरण कीजिए। उसके बिलकुल पूरा होने तक सोचते रहिए, उसकी पूरी यात्रा को महसूस कीजिए और स्वयं जानिए कि क्या होता है। आप पाएंगे कि विचारकर्ता ही नहीं। क्योंकि जब विचार का अवसान हो जाता है तब विचारकर्ता का अस्तित्व भी नहीं रह जाता। हम समझते हैं कि ये दो स्थितियां हैं, विचार के रूप में और विचारकर्ता के रूप में। ये दोनों ही स्थितियां कल्पित हैं, अवास्तविक हैं। जो है वह केवल विचार है, और विचारों का समूह ला खड़ा करता है 'अहं' को अर्थात् विचारकर्ता को।
— 2-	- २ -
Thought Is the Response of Stored-Up Memory: Race, Group, Family	विचार है : जाति, वर्ग और वंश की संगृहीत स्मृति की प्रतिक्रिया
What do we mean by thought! When do you think? Obviously, thought is the	विचार से आपका क्या तात्पर्य है? आप विचार कब करते हैं? स्पष्टतः विचार किसी प्रतिक्रिया

<p>result of a response, neurological or psychological, the response of stored-up memory. There is the immediate response of the nerves to a sensation, and there is the psychological response of stored-up memory, the influence of race, group, guru, family, tradition, and so on—all of which you call thought. So, the thought process is the response of memory, is it not? You would have no thoughts if you had no memory, and the response of memory to a certain experience brings the thought process into action.</p>	<p>का परिणाम होता है, चाहे वह तंत्रिकीय प्रतिक्रिया हो या मनोवैज्ञानिक--है वह संगृहीत स्मृति की प्रतिक्रिया ही। किसी अनुभूति के प्रति तंत्रिकाओं में तत्काल प्रतिक्रिया होती है और संचित स्मृति मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया करती है जो जाति, वर्ग, गुरु, परिवार, परंपरा आदि-आदि से प्रभावित रहती है--और आप इस सब को विचार कह देते हैं। इस प्रकार विचार-प्रक्रिया स्मृति की प्रतिक्रिया है, है न? यदि आपकी कोई स्मृति नहीं है तो विचार भी नहीं होंगे। किसी परिस्थिति के प्रति स्मृति की प्रतिक्रिया ही विचार-प्रक्रिया को गति प्रदान करती है।</p>
-3-	- ३ -
What Is the Origin of Thinking?	विचारणा का उद्गम क्या है?
<p>One can see very simply that all thinking is a reaction to the past—the past being memory, knowledge, experience. All thinking is the result of the past. The past—which is time, yesterday and that yesterday stretching out indefinitely into the past—is what is considered time: time as the past, time as the present, time as the future. Time has been divided into these three parts, and time is like a river, flowing. We have divided into these fragments, and in these fragments thought is caught.</p>	<p>यह बात बिल्कुल साफ है कि सारी विचारणा अतीत के प्रति होने वाली प्रतिक्रिया ही है--अतीत अर्थात् स्मृति, ज्ञान, अनुभव। सारी विचारणा अतीत का परिणाम होती है। अतीत अर्थात् काल, बीता हुआ कल। बीता हुआ कल जो अतीत में अनंत छोर तक विस्तार पा गया है--उसी को काल मान लिया गया है, काल अतीत के रूप में, काल वर्तमान के रूप में, काल भविष्य के रूप में, काल को इन तीन खंडों में विभाजित कर दिया गया है लेकिन काल तो नदी की तरह है--प्रवाहमान। इसे इन खंडों में हमने बांटा है और विचार इन खंडों में अटकता-भटकता रहता है।</p>
-4-	- ४ -
Memory as Thought Has Its Place	विचार के रूप में स्मृति का अपना स्थान है
<p>We are not saying that thought must stop; thought has a definite function. Without thought we couldn't go to the office, we wouldn't know where we live, we wouldn't be able to function at all.</p>	<p>हम यह नहीं कह रहे हैं कि विचार करना रोक देना चाहिए। विचार का एक निश्चित प्रयोजन है। विचार के बिना हम कार्यालय नहीं जा सकते, यह नहीं जान सकते कि हम कहां रहते हैं, इसके बिना हम कोई भी कार्यकलाप करने में समर्थ नहीं रह जाते।</p>
<p>But if we would bring about a radical revolution in the whole of consciousness, in the very structure of thinking, we must</p>	<p>परंतु यदि हमें संपूर्ण चेतना में, विचारणा के मूल ढांचे में आमूल परिवर्तन लाना है तो हमें यह बात भली-भांति समझ लेनी चाहिए कि</p>

realize that thought, having built this society, with all its mess, cannot possibly resolve it.	अपने तमाम जंजाल से इस समाज का निर्माण करने वाले विचार द्वारा इसका समाधान किया जाना संभव नहीं है।
-5-	- ५ -
Thought Seeks Security	विचार सुरक्षा चाहता है
Thought is the very essence of security, and that is what the most bourgeois mind wants—security, security at every level! To bring about a total change of the human consciousness, thought must function at one level and must not function at another level. Thought must function naturally, normally at one level, the everyday level—physically, technologically—with knowledge, but must not overflow into another field where thought has no reality at all. If I had no thought I wouldn't be able to speak. But a radical change within myself as a human being cannot be brought about through thought, because thought can only function in relation to conflict. Thought can only breed conflict.	विचार तो सुरक्षा का अपरिहार्य लक्षण है और पुरातनवादी मानसिकता वाले लोग यही चाहते हैं--सुरक्षा और वह भी हरएक स्तर पर। मानव चेतना में संपूर्ण परिवर्तन लाने के लिये विचार एक स्तर पर अपना कार्यकलाप करे परंतु अन्य स्तर पर नहीं। वह अपना कार्य एक स्तर पर अर्थात् दिन-प्रतिदिन के भौतिक व तकनीकी स्तर पर तत्संबंधी जानकारी के साथ सहज व स्वाभाविक रूप से करे, परंतु उसे उस अन्य क्षेत्र में घुसपैठ नहीं करनी चाहिए, जहां उसके लिये वास्तव में कोई स्थान है ही नहीं। यदि मुझमें कोई विचार नहीं है तो मैं बोल भी नहीं पाऊंगा। परंतु, मानव रूप में मेरे भीतर कोई आमूल परिवर्तन विचार के माध्यम से नहीं लाया जा सकता क्योंकि विचार तो द्वंद्व की स्थिति में ही कार्य करता है। वह केवल द्वंद्व को ही जन्म दे सकता है।
-6-	- ६ -
Why Change?	परिवर्तन क्यों?
Man has lived for two million years or more, but he has not solved the problem of sorrow. He is always sorrow-ridden: he has sorrow as his shadow or as his companion. Sorrow of losing somebody; sorrow in not being able to fulfill his ambitions, his greed, his energy; sorrow of physical pain; sorrow of psychological anxiety; sorrow of guilt; sorrow of hope and despair—that has been the lot of man; that has been the lot of every human being. And he has always tried to solve this problem—to end sorrow within the field of consciousness— by trying to avoid it, by running away from sorrow, by suppressing it, by identifying himself with something greater than himself, by	मानव बीस लाख या इससे भी अधिक वर्ष बिता चुका है परंतु दुख की समस्या को नहीं सुलझा पाया है। वह सदैव दुखग्रस्त ही रहता है। दुख उसकी छाया की तरह, उसके साथी की तरह उसके साथ बना रहता है। किसी को खो देने का दुख, अपनी इच्छाओं, अपने लोभ, अपनी शक्ति की पूर्ति न कर पाने का दुख, शारीरिक पीड़ा व मानसिक चिंता का दुख, अपराध बोध का दुख, आशा-निराशा का दुख, यह मनुष्य का--पूरी मानव जाति का--भाग्य बन गया है। और वह चेतना की परिधि के अंदर दुख को समाप्त करने की इस समस्या के समाधान हेतु सदैव प्रयासरत रहा है--दुख को अनदेखा करके, इससे पलायन करके, इसका दमन करके, स्वयं का अपने से किसी महान के साथ तादात्म्य करके, सुरा सेवन

<p>taking to drink, to women, by doing everything in order to avoid this anxiety, this pain, this despair, this immense loneliness and boredom of life—which is always within this field of consciousness, which is the result of time.</p>	<p>करके, स्त्रीरमण करके, जीवन में व्याप्त चिंता, पीड़ा, हताशा, भारी अकेलापन और ऊब से बचने के लिये कुछ भी करके--और यह सब चेतन मन की परिधि में हो रहा है जो कि काल का परिणाम है।</p>
<p>-7-</p>	<p>- ७ -</p>
<p>Sorrow Cannot Be Ended through Thought</p>	<p>विचार के माध्यम से दुख का अंत संभव नहीं</p>
<p>So man has always exercised thought as a means to get rid of sorrow by right effort, by right thinking, by living morally, and so on. The exercise of thought has been his guide—thought with intellect, and all the rest of it. But thought is the result of time, and time is this consciousness. Whatever you do within the field of this consciousness, sorrow can never end. Whether you go to the temple, or you take to drink, both are the same. So, if there is learning, one sees that through thought there is no possibility of a radical change, but there will be continuity of sorrow. If one sees that, then one can move in a different dimension. I am using the word see in the sense not intellectually, not verbally, but with a total understanding of this fact—the fact that sorrow cannot be ended through thought.</p>	<p>मानव ने सदैव दुख से छुटकारा पाने के लिए विचार को साधन के रूप में प्रयोग करने का यत्न किया है--सम्यक प्रयास द्वारा, सम्यक विचारणा द्वारा, नैतिक जीवन यापन द्वारा, इत्यादि। विचार-अभ्यास उसका पथ-प्रदर्शक बना रहा है--बुद्धि के साथ विचार और इसी प्रकार के अन्य अभ्यास। परंतु विचार तो काल का परिणाम है और काल, समय ही यह चेतना है। इस चेतना की परिधि के भीतर आप कुछ भी कर लें दुख का अवसान नहीं हो सकता। चाहे आप मंदिर चले जायें या सुरा-सेवन कर लें--दोनों बातें एक ही है। अतः यदि सीखना हो पाए तो व्यक्ति देख पाता है कि विचार के माध्यम से आमूल परिवर्तन की कोई संभावना नहीं होती बल्कि दुख की निरंतरता बनी रहती है। यदि कोई यह देख पाए तो वह एक भिन्न आयाम में जा सकता है। मैं यहां देखना शब्द का प्रयोग बौद्धिक या शाब्दिक अर्थ में नहीं कर रहा हूँ बल्कि इस तथ्य को पूरी तरह समझ लेने के रूप में प्रयोग कर रहा हूँ--इस तथ्य को कि दुख को विचार के माध्यम से समाप्त नहीं किया जा सकता।</p>
<p>-8-</p>	<p>- ८ -</p>
<p>Living with What Is</p>	<p>‘जो है’ उसके साथ जीना</p>
<p>That is, is it possible to look at it without thought? This does not mean that you go blank, but you look at it. And it is only possible to look when there is no sense of the 'me' interfering with the look. You understand? That is, there is the fact that I am violent. And I have pushed away</p>	<p>तो क्या इसे बिना किसी विचार के देख पाना संभव है? इसका अर्थ यह नहीं कि आप तटस्थ व उदासीन हो जाएं बल्कि आप इसे ध्यानपूर्वक देखें। और यह देखना तभी संभव है जब आपका ‘मैं’ लेशमात्र भी इस देखने में हस्तक्षेप न कर रहा हो। जैसे यह एक तथ्य है</p>

<p>from me the silly idea of not being violent, as that is too juvenile, too absurd, and has no meaning. What is the fact—that I am violent. And also I see that to struggle to get rid of it, to bring about a change in it, needs effort, and that the very effort which is exercised is a part of violence. And yet, I realize that violence must be completely changed, transformed; there must be a mutation in that.</p>	<p>कि मैं हिंसक हूँ और हिंसक न होने के नासमझी भरे विचार को मैंने स्वयं से दूर कर दिया है क्योंकि यह बहुत बचकाना है, असंगत है और इसका कोई अर्थ नहीं है, 'जो है' वही तथ्य है--और वह तथ्य है कि मैं हिंसक हूँ। और मैं यह भी देखता हूँ कि इस तथ्य से बचने के लिये संघर्ष करने में, इसमें बदलाव लाने में प्रयास की दरकार होगी पर सायास किये जाना वाला यह प्रयत्न हिंसा का ही तो एक हिस्सा होगा। तब भी मैं यह महसूस करता हूँ कि हिंसा को संपूर्णतः परिवर्तित और रूपांतरित कर देना होगा, इसमें बुनियादी बदलाव लाना होगा।</p>
<p>Now, how is it to be done? If you just push it aside because this subject is very difficult, you will miss an extraordinary state of life: existence without effort, and therefore, a life of the highest sensitivity, which is the highest intelligence. And it is only this extraordinarily heightened intelligence that can discover the limits and the measure of time, and can go beyond that. Do you understand the question, the problem? So far, we have used the ideal as a means or as an incentive to get rid of what is, and that breeds contradiction, hypocrisy, hardness, brutality. And if we push that ideal aside, then we are left with the fact. Then we see that the fact must be altered, and that it must be altered without the least friction. Any friction, any struggle, any effort, destroys the sensitivity of the mind and the heart.</p>	<p>तो यह सब हो कैसे? यदि आप यह सोचकर इसे एक तरफ कर देंगे कि यह विषय तो बहुत कठिन है तो आप जीवन की एक अनोखी स्थिति से वंचित रह जायेंगे उस स्थिति से जिसमें जीवन बिना प्रयास चलता है इसीलिए वह सर्वाधिक संवेदनशीलता की स्थिति होती है और सर्वोच्च प्रज्ञा की भी। यह उच्च प्रज्ञा ही है जो काल की सीमाओं और उसके आकार-प्रकार को पूरी तरह से देख सकती है और उसके पार जा सकती है। आप इस प्रसंग और समस्या को समझ रहे हैं न? अभी तक हम 'जो है' से पिंड छुड़ाने के लिये किसी आदर्श को एक माध्यम या लुभाव के रूप में प्रयुक्त करते आये हैं और इसी से विरोध, पाखंड, निर्दयता और बर्बरता उपजते रहे हैं। यदि हम आदर्श को एक तरफ रख दें तब हमारे समक्ष केवल तथ्य रह जायेगा। तब हम देखेंगे कि इस तथ्य को परिवर्तित किया जाना चाहिए और यह परिवर्तन भी बिना किसी दंड या टकराव के होना चाहिए। कोई भी टकराव, संघर्ष, कोई भी आयास मन-मस्तिष्क की संवेदनशीलता को कुंद कर देता है।</p>
<p>So what is one to do? What one comes to do is to observe the fact—to observe the fact without any translation, interpretation, identification, condemnation, evaluation—just to observe.</p>	<p>तो कोई क्या करे? उसे जो करना है, वह है तथ्य को देखना--तथ्य का स्वरूप बदले बिना, उसका कोई अर्थ निकाले बिना--न तादात्म्य, न निंदा, न आकलन, बस उसे देखना।</p>
<p>-9-</p>	<p>- ६ -</p>

The Nature of Observation	अवलोकन की प्रकृति
You know, I was told that an electron, measured by an instrument, behaves in one way—which cannot be measured on the graph. But when that same electron is observed by the human eye through, a microscope, that very observation by the human mind, through the microscope, alters the behavior of that electron. That is, the human watching the electron brings about in the electron itself a different behavior, and that behavior is different from the behavior when the human mind is not observing it.	मुझे बताया गया है कि जब किसी इलैक्ट्रान की माप-जोख किसी उपकरण द्वारा की जाती है तब वह एक तरह से व्यवहार करता है जिसे ग्राफ पर दर्शाया नहीं जा सकता। परंतु जब उसी इलैक्ट्रान का अवलोकन सूक्ष्मदर्शी यंत्र के माध्यम से किसी मानव नेत्र द्वारा किया जाता है तब मानव मन द्वारा किया गया वही अवलोकन उस इलैक्ट्रान के व्यवहार को बदल देता है। अर्थात् मानव द्वारा किया गया अवलोकन इलैक्ट्रान के ही व्यवहार को बदल देता है और यह व्यवहार उस व्यवहार से भिन्न होता है जब कि उसका अवलोकन मानव-मस्तिष्क द्वारा नहीं किया जा रहा था।
When you just observe the fact, then you will see that there is a different behavior, as there is when the electron is observed. When you look at the fact without any pressure, then that fact undergoes a complete mutation, a complete change, without effort.	जब आप किसी तथ्य का मात्र अवलोकन करते हैं तब आप पायेंगे कि आपका व्यवहार भिन्न होता है जैसा कि इलैक्ट्रान का उसके अवलोकन के समय होता है। जब आप किसी तथ्य को बिना किसी दबाव के देखते हैं, तब उसके स्वरूप में संपूर्ण परिवर्तन आ जाता है, उसमें पूरा बदलाव आ जाता है और वह भी बिना किसी प्रयास के।
— 10 —	- १० -
Loneliness: Living Only in the Prison Of 'Me'	अकेलापन : केवल 'अहं' के कारागार में जीना
And there is the sorrow of loneliness. I do not know if you have ever been lonely: when you suddenly realize that you have no relationship with anybody...And this loneliness is a form of death. As we said, there is dying not only when life comes to an end but when there is no answer, there is no Way out. That is also a form of death: being in the prison of your own self-centered activity, endlessly. When you are caught in your own thoughts, in your own agony, in your own superstitions, in your deadly, daily routine of habit and thoughtlessness, that is also death—not just the ending of the body.	हममें अकेलेपन का दुख है। मैं नहीं जानता कि आप कभी अकेले हुए हैं या नहीं। कभी आपको अचानक ऐसा लगा हो कि किसी से आपके संबंध हैं ही नहीं ... यह अकेलापन मृत्यु का एक रूप है। जैसा मैंने कहा कि जीवन का अवसान ही मृत्यु नहीं है बल्कि जब कोई निदान न हो, बाहर निकलने का कोई मार्ग न हो, वह भी मृत्यु है और अपनी ही आत्मकेंद्रित गतिविधियों के कारागार में रहना, वहीं अनंततः रहना--यह भी मृत्यु का ही एक रूप है। केवल देहावसान ही मृत्यु नहीं है, मृत्यु वह भी है जब आप अपने ही विचारों, अपने ही संताप, अपने ही अंधविश्वासों की गिरफ्त में रह रहे हों, अपनी ही नासमझी और आदतों के निर्जीव दैनंदिन ढर्रे में पड़े हों।

And how to end it also one must find out.. The ending of sorrow is possible.	और इसका अंत कैसे हो यह भी हमें खोजना है... दुख का अंत संभव है।
-11-	- 99 -
Awareness	सजगता
So I think our inquiry must be not for the solution of our immediate problems but rather to find out whether the mind—the conscious as well as the deep unconscious mind in which is stored all the tradition, the memories, the inheritance of racial knowledge—whether all of it can be put aside. I think it can be done only if the mind is capable of being aware without any sense of demand, without any pressure— just to be aware. I think it is one of the most difficult things—to be so aware—because we are caught in the immediate problem and in its immediate solution, and so our lives are very superficial.	अतः मैं सोचता हूँ कि हमारी जिज्ञासा, खोज अपनी तात्कालिक समस्याओं के निराकरण के लिये ही न होकर यह जानने के लिये हो कि क्या हम अपने मन को--चेतन मन को भी और उस गहन अचेतन मन को भी जो तमाम परंपराओं, स्मृतियों और वंशानुगत प्राप्त जातीय ज्ञान से भरा हुआ है--इस सबको क्या हम दरकिनार कर सकते हैं। मैं समझता हूँ कि यह तभी हो सकता है जब मन सजग होने में सक्षम हो--किसी भी चाहत, किसी भी दबाव की अनुभूति के बिना केवल सजग रहने में सक्षम हो। इस प्रकार की सजगता में रहना कोई आसान काम नहीं है क्योंकि हम तो तात्कालिक समस्याओं और उनके तत्काल समाधानों में ही उलझे रहते हैं। और इसीलिए हमारा जीवन बहुत छिछला बना रहता है।
-12-	- 92 -
Right Thinking and Awareness	सम्यक विचारणा और सजगता
Right thought and right thinking are two different states. Right thought is merely a conformity to a pattern, to a system. Right thought is static; it involves the constant friction of choice. Right thinking or true thinking is to be discovered. It cannot be learned. It cannot be practiced. Right thinking is a movement of self-knowledge from moment to moment. This movement of self-knowledge exists in the awareness of relationship...	सम्यक विचार और सम्यक विचारणा दो भिन्न स्थितियाँ हैं। सम्यक विचार, सही विचार तो किसी चले आ रहे ढर्रे और ढंग की अवरोध अनुवृत्ति है। सम्यक विचार स्थैतिक है, गतिहीन है और इसमें चयन का संघर्ष सदैव बना रहता है, जबकि सम्यक विचारणा अथवा तथ्यनिष्ठ रूप से सोचना खोज की प्रक्रिया है। यह सीखी नहीं जा सकती। इसका अभ्यास नहीं किया जा सकता। यह तो स्वबोध में पल-प्रतिपल चलना है। आत्म परिचय की यह प्रक्रिया संबंधों की सजगता में विद्यमान रहती है...
Right thinking can only come into being when there is awareness of every thought and feeling, the awareness not only of a particular group of thoughts and feelings, but of all thoughts and feelings.	सम्यक विचारणा तभी आ सकती है, सही सोच पाना तभी संभव है, जब अपने प्रत्येक विचार और भाव के प्रति हममें सजगता बनी रहे--विचारों और भावों के किसी वर्ग विशेष के प्रति नहीं अपितु समस्त विचारों और भावों